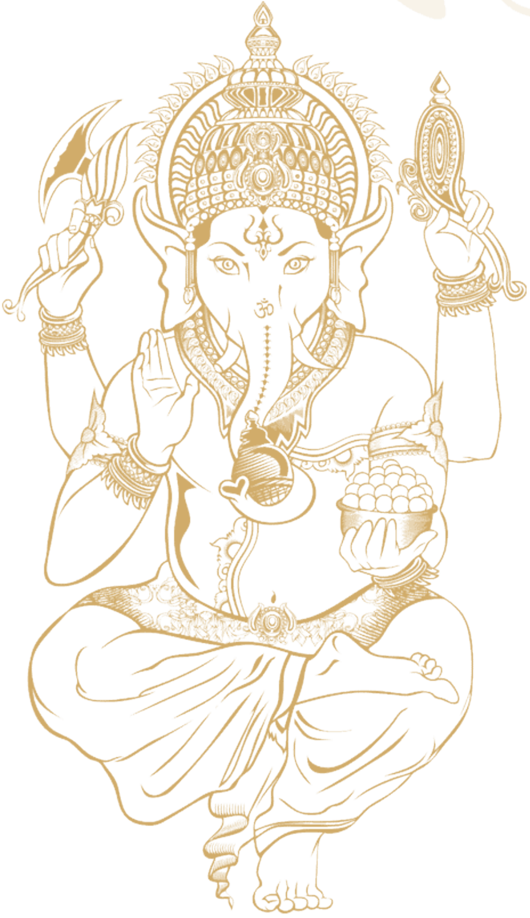

Yukta Mittal

11 Mar 2026

06:31 PM

Kosi Kalan

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121723001

तिथि 11/03/2026 **समय** 18:31:00 **वार** बुधवार **स्थान** Kosi Kalan **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:29
अक्षांश 27:48:00 उत्तर **रेखांश** 77:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	: 05:27:33 घं
वेलान्तर	: 00:10:02 घं
सूर्योदय	: 06:34:45 घं
सूर्यास्त	: 18:26:18 घं
चैत्रादि संवत	: 2082
शक संवत	: 1947
मास	: चैत्र
पक्ष	: कृष्ण
तिथि	: 8
नक्षत्र	: ज्येष्ठा
योग	: सिद्धि
करण	: कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	: राक्षस
योनि	: मृग
नाड़ी	: आद्य
वर्ण	: विप्र
वश्य	: कीटक
वर्ग	: मृग
युँजा	: अन्त्य
हंसक	: जल
जन्म नामाक्षर	: यू-युक्ता
पाया(रा.-न.)	: लौह-ताम्र
होरा	: मंगल
चौघड़िया	: उद्वेग

विंशोत्तरी

बुध 2वर्ष 2मा 14दि
बुध
11/03/2026
25/05/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	11/03/2026
शनि	25/05/2028

योगिनी

भद्रिका 0वर्ष 7मा 23दि
भद्रिका
11/03/2026
03/11/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	11/03/2026
धान्या	14/04/2026
भ्रामरी	03/11/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			28:35:01	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	मंगल	---	0:00			
सूर्य			26:44:06	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.42	अमात्य	पितृ	मित्र
चंद्र			28:16:13	वृश्चिक	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	नीच राशि	1.57	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	12:49:29	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	बुध	सम राशि	1.39	पुत्र	भ्रातृ	वध
बुध	व	अ	18:38:39	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	चंद्र	सम राशि	1.20	मातृ	ज्ञाति	वध
गुरु			20:51:46	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.14	भ्रातृ	धन	मित्र
शुक्र			12:06:31	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	उच्च राशि	1.08	ज्ञाति	कलत्र	अतिमित्र
शनि			08:46:40	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.04	कलत्र	आयु	अतिमित्र
राहु	व		14:39:47	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		14:39:47	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

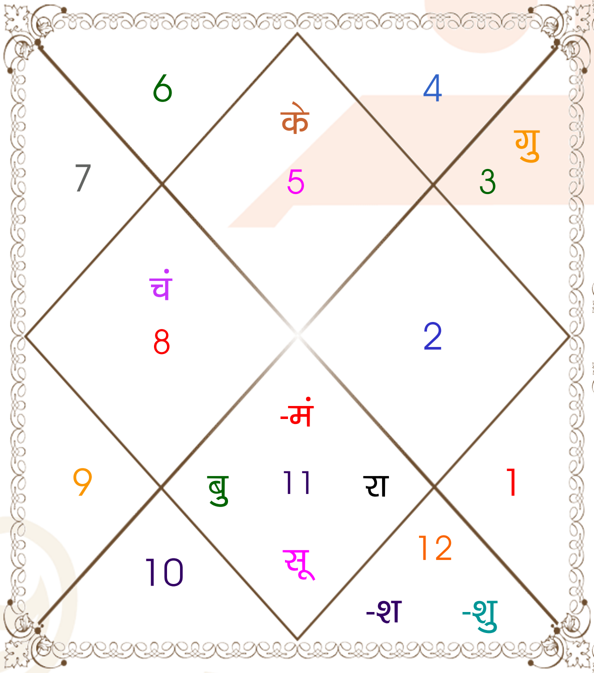

चन्द्र कुंडली

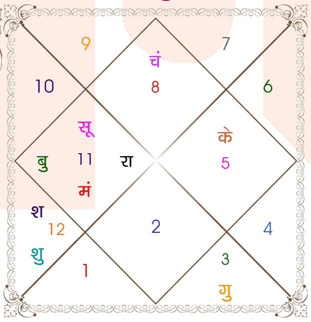

नवमांश कुंडली

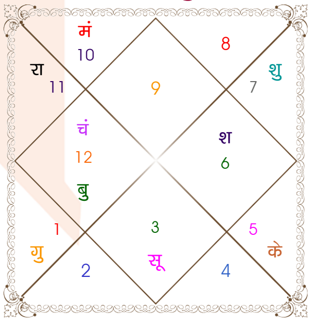

सर्वाष्टकवर्ग

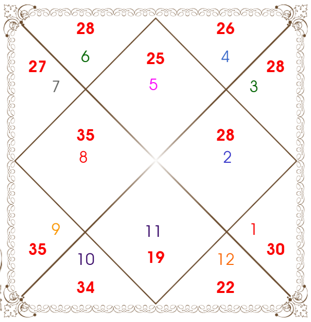

दशमांश कुंडली

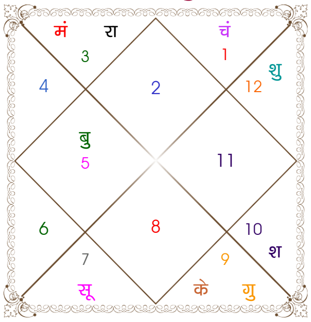

नक्षत्रफल

आप ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशिस्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मृग, वर्ण विप्र, गण राक्षस, वर्ग मृग तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "यु" या "यू" अक्षर से होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र में पैदा हुई हैं। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण में पैदा होने से जातक के पिता को कष्ट की प्राप्ति होती हैं। अतः जन्म समय में ही इस नक्षत्र की शास्त्रीय विधिविधान से शान्ति करवा लेनी चाहिए। इसके लिए इसके कम से कम 28000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए तथा 27 दिन के बाद जब यह नक्षत्र पुनः आये तो उस दिन जपे हुए मंत्रो के दशांश का हवन कराना चाहिए। इस प्रकार विधि पूर्वक समस्त कार्य करने से सम्बन्धित जातक के अरिष्ट समाप्त हो जाते है तथा वह सुखपूर्वक रहता हैं।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्देवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप समाज में एक गणमान्य महिला होंगी तथा चारों ओर आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। आपकी शारीरिक सुन्दरता भी दर्शनीय होगी तथा शरीर कान्ति एवं लावण्यता से पूर्ण रहेगा। धनैश्वर्य से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा अपने समस्त कार्यों को सफल बनाने में सामर्थ्यवान रहेंगी। आप एक सत्प्रतापी महिला होंगी तथा समाज के अधिकाँश लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। आपकी प्रतिष्ठा समाज में अक्षुण रहेगी एवं नेतृत्व करने का अवसर भी आपको प्राप्त होगा। आप एक उत्तम कोटि की वक्ता होंगी तथा अपने भाषण के द्वारा अन्य जनों को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगी।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
शेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरुषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

आपका स्वभाव प्रारम्भ से ही उग्र रहेगा तथा आप शीघ्र ही क्रोधित हो जाएंगी इस प्रकार क्रोधित होने से आपको कई बार लाभ के स्थान पर हानि सहन करनी पड़ेगी। अपने

विस्तृत सामाजिक संबंधों के कारण आपके पुरुषवर्ग से भी मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। साथ ही ईश्वर तथा धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा आजीवन इसका पालन करेंगी।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक क्रोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी तथा उनमें आप स्वयं प्रधान होंगी तथा सभी लोग आपको आदर प्रदान करेंगे। आपकी प्रवृति सन्तुष्टि की रहेगी अतः जो कुछ भी परिश्रम तथा योग्यता से प्राप्त हो उसी पर सन्तोष करेंगी। लेकिन धर्म का नियम पूर्वक पालन करते हुए भी आप अपने क्रोध पर नियंत्रण करने में सर्वथा असफल रहेंगी।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरक्रोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा क्रोधी होता है।

आपकी लेखन कार्य में नैसर्गिक रूप से रूचि रहेगी अतः कविता सृजन में आप सफलता प्राप्त कर सकेंगी। सहनशीलता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा तथा असहाय दुःख को भी सहन करने में आप समर्थ रहेंगी। आप अत्यन्त चतुर एवं चालाक होंगी तथा अपने अधिकाँश कार्यों को चालाकी से ही सिद्ध करेंगी। इसके अतिरिक्त निम्न श्रेणी के लोगों से आप अत्यन्त ही पूज्य समझी जाएंगी तथा ये सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक प्रायः रोगी धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में दुःख प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुडंली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही अधिक प्राप्ति होगी। आप जलोत्पन्न पदार्थो से नित्य लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। आप धनवान महिला होंगी तथा चल अचल सम्पतियों की स्वामिनी होंगी। विविध प्रकार के नवीन परिधानों से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में वाहन सुख को भी प्राप्त करेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से

आपको उचित सहायता तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। माता की आप प्रिय रहेंगी तथा आप भी उनको पूर्ण सम्मान प्रदान करेंगी। जीवन में सर्वप्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में सदैव विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त जलक्रीडा में भी आपकी हार्दिक रूचि रहेगी।

वृश्चिक राशि में पैदा होने के कारण आपकी आखें सुन्दर, बड़ी तथा वक्षस्थल विस्तृत रहेगा। साथ ही शरीर में अल्प श्यामलता का समावेश रहेगा। आपके हाथ या पैर में मछली का चिन्ह भी अंकित हो सकता हैं। आपकी अधिकांश हस्त रेखाएं वज्र तथा पक्षी के आकार की रहेंगी। आप गुरूजन तथा पिता से अच्छे संबंध रखेंगी फलतः इनसे आपको अल्प मात्रा में ही स्नेह तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। । बचपन में आप काफी बीमार भी रहेंगी। आप एक पराक्रमी तथा योग्य महिला होंगी तथा अपने परिश्रम एवं योग्यता के बल पर राज्य में किसी ऊँचे पद पर आसीन हो सकेंगी। आपकी प्रवृति कठोर तथा क्रूर कार्यो की ओर अग्रसर होगी। अतः सेना, पुलिस आदि विभागों को आप अपना कर्म क्षेत्र बना सकेंगी। कभी कभी आप स्वभाव से अत्यन्त ही उग्रता का भी प्रर्दशन करेंगी। जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपके उदर तथा मस्तक का आकार भी विस्तृत रहेगा। अन्य जनों की सुन्दर वस्तुओं को देख कर आप लावण्पता से भी युक्त रहेगा। लोलुपता का प्रर्दशन करेंगी। देखने में आपका शरीर ईश्वर के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा धर्मानुपालन में भी अरूचि प्रदर्शन करेंगी। आपकी ठोड़ी तथा नाखून चोट के निशान से युक्त रहेंगे। आप सदैव कार्य करने में तत्पर रहेंगी। तथा चतुराई से इन्हे सम्पन्न भी करेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक प्रभावशाली महिला समझी जाएंगी। जीवन में यदा कदा आप धन हानि भी प्राप्त करेंगी।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनवान महिला होंगी तथा अपने बड़े परिवार के अतिरिक्ति अन्य बहुत से जनों का पालन करने में समक्ष रहेंगी। पुरूषों के विषय में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली रहेंगी तथा इनसे पूर्ण मान समान तथा लाभार्जन करेंगी। आप सरकारी सेवा में भी तत्पर रहेंगी। साथ ही आपके मन में अन्य जनों के धन को प्राप्त करने की इच्छा सर्वदा बनी रहेगी तथा जीवन में आप इसके लिए प्रयत्न शील रहेंगी। आप अत्यन्त ही दृढ़ संकल्पी होंगी तथा अपने अधिकांश

कार्यो को दृढता पूर्वक सम्पन्न करने में हमेशा सक्षम रहेगी। आपको निष्क्रिय होकर बैठना अच्छा नहीं लगेगा। अतः कोई न कोई कार्य हमेशा करती रहेंगी। साहस का भी आपमें अभाव नहीं रहेगा। तथा अपने अधिकाँश कार्यो को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थ नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

कभी कभी आप मनोरंजन करने या जुआ आदि खेलने में भी उत्सुक्ता का प्रर्दशन करेंगे परन्तु इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। आपके स्वभाव में उग्रता की प्रबलता होने के कारण आपकी रूचि भी विवाद आदि करने में जागृत रहेगी। कभी कभी आप हृदय में अत्यन्त ही कमजोरी की अनुभूति करेंगे। जीवन में प्रायः अशान्ति की ही अनुभूति रहेगी। शान्तचित कम ही रहेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बचपन से ही घर से बाहर अन्यत्र निवास करेंगी। आपकी प्रवृति भी भ्रमणप्रिय होगी तथा इधर उधर भ्रमण में काफी समय व्यय करेंगी। आप अभिलाषी प्रवृति की महिला भी होंगी तथा अन्य लोगों के समक्ष अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करेंगी। अपने बन्धु तथा सबंधियों से आपका व्यवहार मधुर साथ ही साहसी प्रवृति होने से आप साहस पूर्वक धनार्जन करने में सफल रहेंगी।

बालप्रवासी कूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी बातें करने वाली होगी। आपके मन में कठोरता की प्रबलता रहेगी तथा दया एवं करूणा का भाव अल्प मात्रा में ही मन में उत्पन्न होगा। परन्तु आप अत्यन्त ही साहसी होंगी। अतः अपने समस्त कार्यो को साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपका स्वभाव क्रोधी भी रहेगा तथा छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोधित या उत्तेजित होना आपके लिए सामान्य बात रहेगी। विवाद प्रिय भी होंगी। तथा अन्य सामाजिक जनों से परस्पर विवाद चलता रहेगा। इसके अतिरिक्त कभी कभी लोगों से आपका विरोद भी रहेगा।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित रह सकती हैं।

आपका शारीरिक सौन्दर्य भी सुन्दर रहेगा एवं परन्त वाणी कभी कभी कठोर होगी। जिससे श्रोता आपसे प्रसन्न नहीं रहेंगे। अतः यत्नपर्वूक आपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अत्यन्त ही स्वतंत्र प्रवृति की होंगी तथा अपने अधिकाँश कार्य कलापों को बिना किसी हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगी। आपके स्वभाव में हिंसावृति का अभाव रहेगा तथा सद्वृति रहेंगी। अच्छे तथा उत्तम साधनों के द्वारा आप अपनी आजीविका का अर्जन करेंगी। सत्य का अनुपालन करने के लिए भी आप आजीवन प्रयत्नशील रहेंगी। अपने बन्धुओं संम्बधियों तथा मित्रों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा सभी आपको स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। धर्म में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा नियम पूर्वक इसका पालन अपने जीवन में करती रहेंगी। साथ ही विवाद में भी आप कुशल होंगी। तथा नित्य सफलता प्राप्त करेंगी।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के

लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

आपके लिए आश्विन मास प्रतिपदा,षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक होंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,7,11 तिथियां रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग तथा गर करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में सर्वथा त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहने की आवश्यकता है।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो विभिन्न प्रकार से मानसिक तनाव, शारीरिक व्याकुलता, नौकरी या पदोन्नति में असफलता या अन्य शुभकार्यों में सफलता की प्राप्त नहीं हो रही हो, तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट भगवान शिव की आराधना करनी चाहिए तथा नित्य प्रति शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करना चाहिए साथ ही सोमवार तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी रखने चाहिए एवं सोना, मूंगा, तांवा, रक्तवस्त्र, रक्तपुष्प, रक्तचन्दन, गेहूँ, मलका आदि पदार्थो का भी किसी सुपाल को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान से कम से कम 7000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक तनाव से मुक्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त होकर शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।